राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, तिरुपति में आयोजित
राष्ट्रीय संस्कृत सम्मेलन में मुख्य अतिथि
माननीय राज्यपाल श्री गुलाब चंद कटारिया का उद्बोधन
(दिनांक 12 जुलाई, 2023)

- साहित्य अकादमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवास राव जी,
- राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, तिरूपति के कुलाधिपति श्री एन. गोपालास्वामी जी,
- उपस्थित अतिथिगण
- संस्थान के विद्यार्थियों एवं
- देवियों और सज्जनों

राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय परिसर तिरुपति के इस सभागार में आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय संस्कृत सम्मेलन के शुभारम्भ के अवसर पर विद्वदजनों के बीच उपस्थित होकर मुझे विशेष हर्ष की अनुभूति हो रही है। मैं यहां आपके उत्साहवर्द्धक स्वागत और सम्मान के लिए आपका हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। तिरुपति की इस पावन भूमि पर आकर मैं अनंत आनन्द का अनुभव कर रहा है। यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे आज़ादी के अमृत महोत्सव के दौरान आयोजित इस सम्मेलन में आपके समक्षआने मौका मिला है।

मुझे यह कहते हुए गर्व है कि देववाणी संस्कृत भारत की अस्मिता का पर्याय है। विश्व की प्राचीन भाषाओं में से एक संस्कृत अनेक भाषाओं, सभ्यताओं और संस्कृतियों का उद्गम स्थल मानी गई है। इसे भारतीय संस्कृति की संवाहिका और राष्ट्र के जीवन का स्पन्दन कहा गया है। यह दुनिया की सबसे संगीतमयी और स्वतंत्र भाषा है।

यह सही है कि इसका अतीत अत्यंत गौरवशाली रहा है। वेद, उपनिषद, पुराण, महाकाव्य, नीतिशास्त्र - सभी संस्कृत की ही देन है। इतना सब होते हुए भी यह विचारणीय प्रश्न यह है कि संस्कृत जन–जन की भाषा क्यों नहीं बन पाई, या बन पा रही है? क्या इस भाषा को हम वह पहचान दिला पाए हैं जिसकी वह अधिकारिणी है? वास्तविकता तो यह है कि संस्कृत अपनी समस्त सारस्वत समृद्धि के बावजूद अपने देश में दैनन्दिन कार्यकलापों की भाषा नहीं बन पाई है। हिन्दी, अंग्रेजी या अन्य क्षेत्रीय भाषाओं की व्यावहारिक लोकप्रियता के लिहाज से संस्कृत का स्थान दोयम ही माना जाता रहा है। इसके अनेक सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक कारण रहे हैं। संस्कृत विद्वानों का जनसाधारण से अलगाव या अपने को उनसे विशिष्ट सिद्ध करने की मनोवृत्ति भी इसके क्रमिक विकास में बाधक ही रही है।

आजकल यह समझा जाता है कि संस्कृत केवल पूजा–पाठ, कर्मकांड और पौरोहित्य की भाषा है। यह भाषा जीवनोपार्जन के लिए विशेष अवसर प्रदान नहीं करती इसलिए इसके पठन–पाठन के प्रति कोई विशेष उत्साह दिखाई नहीं देता। आज वही भाषा हमारी सामाजिक पहचान बना पाती है, जो रोजगार के अवसर तलाशने में मदद करे, जो वैश्विक स्तर पर दूसरे देशों से जोड़ने में सहायक हो, जिस भाषा में दैनन्दिन संवाद हो सके, जिस भाषा से हमारा तथाकथित सामाजिक स्तर ऊपर उठ सके। हमारे देश में अंग्रेजी का वर्चस्व इसका ज्वलंत उदाहरण है।

प्रश्न यह भी उठता है कि संस्कृत जैसी प्राचीन, अन्य भाषाओं की जननी, संस्कृति की पोषक इस भाषा की महिमा को कितने लोग मन से स्वीकार करते हैं? हमारे देश में जिस प्रकार जनता अंग्रेजी के पब्लिक स्कूलों की मांग करती है क्या कभी संस्कृत

स्कूलों की मांग भी की जाती है? क्या हम देश में संस्कृत के पक्ष में अनुकूल और उत्साहवर्द्धक माहौल बना पा रहे हैं?

इन प्रश्नों से रू-ब-रू होकर ही हम संस्कृत के पठन-पाठन और शिक्षण-प्रशिक्षण के सम्बन्ध में अभिप्रेत रणनीति का निर्माण कर सकते हैं। जब तक हम समाज के सोच में बदलाव नहीं ला पाते तब तक इस सोच से निजात नहीं पा सकते कि संस्कृत एक 'मृतभाषा' है।

आज यह जमीनी हकीकत है कि लोग संस्कृत के विषय को पर्याप्त गंभीरता से नहीं लेते। विद्यालयों में इसे तीसरी भाषा के रूप में पढ़ाया जाता है। इस भाषा की विचार संपदा, वैज्ञानिकता और इसके व्यापक फलक के प्रति उदासीन रहते हैं। दुर्भाग्य यह है कि संस्कृत पढ़ने-पढ़ाने वालों को लोग 'मॉडर्न' मानने को तैयार नहीं होते। इस भाषा के पराभव के लिए लोग स्वयं ही उत्तरदायी हैं, जो अक्सर यह शिकायत करते रहते हैं कि संस्कृत पिछड़ रही है, इसका कोई वजूद नहीं है।

जब तक हम इस हीन ग्रन्थि से मुक्त नहीं होंगे संस्कृत अपने ही घर में प्रवासिनी रहेगी। इसके पुनरुद्धार के लिए एक ऐसे व्यावहारिक अभियान की आवश्यकता है जिससे जन-जन में यह संदेश जाये, यह विश्वास पैदा हो, यह संकल्प जाग्रत हो कि संस्कृत न केवल हमारी सबसे प्राचीन भाषा है बल्कि यह विश्व की सबसे अधिक वैज्ञानिक भाषा है। इसमें ज्ञान-विज्ञान का अक्षय कोष है। इस कोष के सम्यक् अनुशीलन, अन्वेषण और अनुप्रयोग के द्वारा भाषा की प्रच्छन्न शक्तियों और क्षमताओं को आधुनिक युग की अपेक्षाओं के अनुरूप प्रयुक्त किया जा सकता है।

कैसी विडम्बना है कि जर्मनी जैसे देश ने इस भाषा के महत्व को सदियों पहले पहचान लिया था, अन्य देशों में भी संस्कृत के पठन-पाठन के प्रति जनरुचि विद्यमान है, पर देववाणी के अपने ही देश में संस्कृत को अपनी पहचान के लिए संकट का सामना करना पड़ रहा है। संस्कृत को व्यावहारिक एवं रोजगारोन्मुख बनाने के लिए जरूरी है कि संस्कृत के वाङ्मय को आधुनिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया जाये। उसमें सन्निहित ज्ञान-विज्ञान, प्राचीन तकनीकें, प्रौद्योगिकी आदि को वैज्ञानिक आधार देकर पाठ्यक्रमों में शामिल किया जाये। वैदिक गणित को आज इस दिशा में पर्याप्त महत्व मिल रहा है। संस्कृत शिक्षण-प्रशिक्षण-प्रबंधन में आधुनिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर नीति निर्धारण किया जाये।

संस्कृत के प्रचार-प्रसार में महती भूमिका निभाने वाले शिक्षकों, विद्वानों को विशेष आर्थिक सहायता तथा सम्मान दिया जाये। सभी संस्कृत शिक्षण संस्थानों में सैन्य शिक्षा, प्रबंधन शिक्षा, तकनीकी कौशल शिक्षा जैसे रोजगारोन्मुखी पाठ्यक्रम संचालित किये जायें।

संस्कृत के उत्थान के लिए कारगर कदम उठाने की अवश्यकता है। मात्र सुझावों से संस्कृत का भाग्य नहीं सुधारा जा सकता। इनके सामयिक क्रियान्वयन के लिए राज्य सरकारें और केन्द्रीय सरकार संस्कृत शिक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देकर प्रभावी नीतियां तैयार करें। संस्कृत के लिए समग्र राष्ट्रीय प्रयास निश्चिय ही संस्कृत को एक व्यावहारिक भाषा के रूप में प्रतिष्ठित कर सकेगा। प्रसन्नता की बात है कि असम में संस्कृत अध्ययन के संरक्षक राजा भास्कर वर्मन के नाम पर विशेष रूप से संस्कृत और प्राचीन अध्ययन के लिए "कुमार भास्कर वर्मा संस्कृत और प्राचीन अध्ययन विश्वविद्यालय” की स्थापना की गई है।

हाल ही में असम सरकार ने सभी संस्कृत TOLs का नाम कुमार भास्कर वर्मे संस्कृत विद्यालय रखने का निर्णय लिया है जहां नई शिक्षा नीति 2020 की नई संरचना के अनुसार 9वीं से 12वीं कक्षा तक अनिवार्य विषय के रूप में संस्कृत का अध्ययन कराया जाएगा।

जैसा कि सर्वविदित है संस्कृत एक परिष्कृत व्याकरण प्रणाली पर आधारित एक उच्च संरचित भाषा है। इसका अध्ययन भाषाई अनुसंधान और तुलनात्मक विश्लेषण की सुविधा प्रदान करता है। इसकी संरचना का कई आधुनिक भाषाओं के विकास पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है, जिनमें हिंदी, बंगाली और मराठी जैसी कई भारतीय भाषाएँ भी शामिल हैं।

संस्कृत एक ऐसी बहुमुखी भाषा है जिसमें किसी एक वस्तु को व्यक्त करने के लिए शब्दों की एक पूरी श्रृंखला होती है। संस्कृत शब्द मूल शब्दों से बने होते हैं जिनके अपने अर्थ होते हैं, और इन्हें जोड़कर स्थिर अर्थ वाले नए शब्द बनाए जा सकते हैं जिससे रचनात्मक अभिव्यक्ति सहज संभव होती है।

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति और सभ्यता के अध्ययन के लिए संस्कृत ग्रंथ एक अमूल्य संसाधन हैं। संस्कृत साहित्य, दर्शन, प्राचीन भारतीय विज्ञान, गणित, खगोल विज्ञान और चिकित्सा जैसे विभिन्न विषयों में ज्ञान का एक व्यापक भंडार प्रदान करती है। इन सभी क्षेत्रों के विद्वान और शोधकर्ता अपने अध्ययन और विश्लेषण के लिए संस्कृत ग्रंथों को ही विश्वसनीय मानते हैं।

संस्कृत के महत्व को समझते हुए आजकल विद्यालयों, विश्वविद्यालयों और संस्कृत भारती जैसे समर्पित संस्कृत संगठनों के माध्यम से भाषा का पुनरुद्धार करने का प्रयास किया जा रहा है। सांस्कृतिक कार्यक्रमों और डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से भी संस्कृत को लोकप्रिय बनाने की कोशिशें की जा रही हैं।

संस्कृत का अनुप्रयोग आयुर्वेद, योग, इंडोलॉजी और कंप्यूटर विज्ञान जैसे क्षेत्रों में भी होने लगा है जो इसके संरक्षण और पुनरुद्धार में सहायक दे सकता है, जिससे समकालीन संदर्भों में इसकी प्रासंगिकता सुनिश्चित हो सकती है। आज वैज्ञानिक खोजों के नामकरण जैसे आधुनिक संदर्भों में भी संस्कृत का उपयोग किया जाने लगा है जिससे यह आशा बलवती हो रही है कि ऐसे सकारात्मक प्रयास संस्कृत का संरक्षण सुनिश्चित करने के साथ ही यह भी स्थापित करेंगे कि यह एक जीवित भाषा है।

भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को उजागर करने की कुंजी के रूप में कार्य करने वाली संस्कृत आज भी विभिन्न विषयों और अध्ययन के क्षेत्रों में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करती है लेकिन विभिन्न कारणों से यह शिक्षाविदों और विद्वानों की भाषा बन कर रह गई है, भले ही यह हजारों वर्षों तक एक बोलचाल की भाषा रही हो।

हमारे लिए यह बहुत ही प्रसन्नता की बात है कि संस्कृत भाषा और साहित्य को जनता तक ले जाने के लिए, संस्कृति और साहित्य अकादमी मंत्रालय कार्यक्रमों की एक श्रृंखला आयोजित करने जा रहा है। कार्यक्रमों की इस कड़ी का शुभारम्भ "संस्कृत समुन्मेषाः” के इस तीन दिवसीय राष्ट्रीय संस्कृत सम्मेलन से हो रहा है।

इस सम्मेलन के कार्यक्रमों में कंप्यूटर विज्ञान, कविता पाठ, अष्टवधानम, हरिकथा, संस्कृत शोभायात्रा, दुर्लभ पांडुलिपियों का प्रदर्शन और ज्ञान अर्जन के विभिन्न क्षेत्रों में संस्कृत के योगदान पर शोध-पत्रों की प्रस्तुतियों के उपरांत होने वाला विचार-मंथन संस्कृत के पुनरुद्धार के लिए निश्चय ही कारगर साबित होगा।

मैं आशा करता हूँ कि आज़ादी के अमृत महोत्सव के अन्तर्गत आयोजित इस सम्मेलन में प्रतिभागी बनने वाले प्रतिष्ठित संस्कृत विद्वानों, लेखकों, कवियों और शोधकर्ताओं का पारस्परिक विचार-विमर्श संस्कृत को जमीनी स्तर तक ले जाने और जनता के बीच जागरूकता बढ़ाने में सहायक सिद्ध होगा।

अंत में, मैं सभी आयोजकों को बधाई देते हुए सम्मेलन की सफलता की शुभकामनाओं के साथ अपनी बात समाप्त करता हूँ। धन्यवाद,

जय हिन्द।